विचार बिन्दु

उपदेश के बजाय कहीं ज्यादा हम करके सीखते हैं। - बर्क

डिग्री नौकरी के दरवाजे तक पहुंचा सकती है, दरवाजे के भीतर ले जाने के लिए डिग्री काफी नहीं!

बेरोजगारी हमारे देश की सबसे बडी समस्याओं में से एक है। हमारी शिक्षण संस्थाओं से हर बरस बहुत बडी संख्या में युवा पढ़ाई करके और कोई प्रमाण पत्र, उपाधि या डिग्री लेकर निकलते हैं। स्वाभाविक ही है कि वे अपनी इस नव अर्जित उपलब्धि के आधार पर कोई उपयुक्त काम या नौकरी चाहते हैं। बहुत कम भाग्यशाली युवा ऐसे होते हैं जिन्हें पढ़ाई पूरी करते-करते ही किसी अच्छी नौकरी का प्रस्ताव मिल जाता है। बडे, नामी और प्राय: महंगे शैक्षिक प्रतिष्ठान बडी कंपनियों और नियोक्ताओं को अपने यहां आमंत्रित करते हैं ताकि वे अपनी जरूरत के अनुसार कार्मिक चुन लें. जो चुन लिए जाते हैं, वे अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त हो जाते हैं और शेष अलग-अलग तरीकों से काम पाने के प्रयासों में जुट जाते हैं।

वे अपने सीवी तैयार करते हैं, आवेदन करते हैं, चयन परीक्षाओं के फॉर्म भरते हैं और अगर उनमें सफल होते हैं तो साक्षात्कार देते हैं। यह एक लम्बी प्रक्रिया होती है जिससे गुजर कर कुछेक को अपनी मंजिल पा लेने की खुशी हासिल होती है। जो सफल नहीं होते, उनमें से शायद बहुत थोड़े ऐसे होते हैं जो अपनी असफलता के कारणों पर विचार करते हैं। अधिकांश तो पक्षपात, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार के माथे पर ठीकरा फोड कर निश्चिंत हो जाते हैं। वे बिना किसी विचार-मंथन के फिर प्रयत्न में जुट जाते हैं।

विभिन्न कारणों से मुझे ऐसे अनेक युवाओं से मिलने और बतियाने के मौके मिलते रहते हैं जिन्होंने मेरे विषय में-अर्थात हिंदी में-एम.ए. या पी-एच.डी. कर ली है और या तो वे जो नौकरी कर रहे हैं उससे बेहतर नौकरी के आकांक्षी हैं या अपनी पहली नौकरी के लिए प्रयत्नरत हैं. ऐसे युवाओं से मेरा संवाद प्राय: उनके ऐसी किसी नौकरी की आकांक्षा के सिलसिले में होता है जहां उनकी साहित्य की पढ़ाई का कोई उपयोग हो. ऐसे कामों में अध्यापन सर्वोपरि होता है।

बात शुरू करने के लिए और जिससे मैं बात कर रहा हूं उसे थोडा सहज कर देने के लिए मैं बहुत आसान और निजी-से लगने वाले सवाल से शुरुआत करता हूं. मसलन, उन्हें कौन-सा लेखक या कौन-सी कृति सर्वाधिक पसंद है, या अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने ऐसा क्या पढ़ा जिसकी अनुशंसा वे मुझसे भी करना चाहें. या ऐसा ही कोई दूसरा सवाल। अगर वे एक सवाल का जवाब नहीं दे पाते हैं तो मैं अनौपचारिक बातचीत के लहजे में दूसरा या तीसरा सवाल पूछता हूं, ताकि वे सहज हो जाएं और हम आगे कुछ गंभीर बातचीत कर सकें।

यह लिखते हुए बहुत अधिक दुख हो रहा है कि मुझे प्राय: निराश होना पड़ता है. मैं पाता हूं कि जब वे पढ़ाई कर रहे थे तो उनमें से अधिकांश ने मूल पुस्तकों की जगह केवल पासबुक्स पढ़ीं, किसी भी लेखक या रचना के बारे में विस्तार से कुछ नहीं जाना. कोई उनका प्रिय लेखक नहीं बना. और इन सबसे ऊपर यह कि भले ही वे पांच, दस या इससे भी अधिक बरसों से नौकरी के लिए प्रयत्नरत हैं और इस दौरान कोई खास काम नहीं कर रहे हैं, उन्होंने इन वर्षों में कुछ भी नहीं पढ़ा है।

मैं इस बात का कारण जानने का प्रयास करता हूं और उनसे ही पूछता हूं. उनसे जो जवाब मिलते हैं वे प्राय: यह होते हैं: क्या करें, टाइम ही नहीं मिलता। पढ़ाई पूरी करने के बाद प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में ही लगे रहते हैं। (यह जान पाना कठिन होता है कि तैयारी से उनका आशय क्या है!) वे गांव में या किसी दूरस्थ स्थान पर रहते हैं जहां किताबें मिलती ही नहीं हैं। किताबें बहुत महंगी हैं। और ऐसे ही कुछ अन्य जवाब उनसे मिलते हैं।

मैं भी उनकी इस बात से सहमत हूं कि किताबें बहुत महंगी हैं और एक युवा जो बेरोजगार है उससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह नियमित रूप से किताबें खरीदेगा। पुस्तकालय तो हमारे यहां शहरों तक में बहुत बुरी हालत में हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में तो उनकी कल्पना ही मत कीजिए। लेकिन फिर यह सवाल भी सामने आता है कि जब वे पढ़ाई कर रहे थे तब उन्होंने क्या पढ़ा? साहित्य में मूल किताब के बगैर पढ़ाई की कल्पना भी कैसे की जा सकती है?

> **यह समय घोर प्रतिस्पर्धा का है। आपको पूरी गंभीरता से तैयार होना होगा। और तैयारी का अर्थ केवल परीक्षा के पाठ्यक्रम को रटना नहीं है। जिस विषय को आपने अपनी पढ़ाई का विषय बनाया है, उसके प्रति जिज्ञासा और प्रेम भी आपकी तैयारी का हिस्सा होना चाहिए। किताबें पढ़ना केवल परीक्षा पास करने का साधन नहीं है।**

आप मैला आंचल न पढ़ें, गोदान न पढ़ें, कामायनी न पढ़ें, विनय पत्रिका न पढ़ें और कहें कि मैंने इनके बारे में पढ़ रखा है, अर्थात पासबुक्स या कुंजियों या कोचिंग संस्थानों द्वारा उपलब्ध कराए गए नोट्स से पढ़ रखा है, तो आपके अध्ययन के बारे में अच्छी राय कभी नहीं बनेगी। और चलिए, जब आप पढ़ाई कर रहे थे, नहीं पढ़ पाए। उसके बाद तो पढ़ सकते थे! आपने अगर पिछले कुछ बरसों में कुछ भी नहीं पढ़ा है तो मैं कैसे मान लूं कि नौकरी मिल जाने के बाद आप पढ़ेंगे? और जिसने खुद कभी नहीं पढ़ा, और जिसके बारे में यह भी नहीं लगता कि वह आगे चलकर पढ़ेगा, वह किसी भी अकादमिक काम के लिए चयन योग्य कैसे हो सकता है?

मैं इन युवाओं की इस बात से एक हद तक सहमत होता हूं कि उन्हें साहित्य की किताबें नहीं मिल पाती हैं. यह भी कि किताबें बहुत महंगी हैं. हालांकि जब आप अपनी जरूरत की अन्य मदों पर खर्च करते हैं तो कुछ खर्च किताब पर भी कर ही सकते हैं. बात इच्छा और रुचि की भी होती है. अगर कोई कहे कि उसने आज तक एक भी किताब, एक भी कविता, एक भी कहानी, एक भी उपन्यास नहीं पढ़ा तो कम से कम मुझे तो उससे कोई सहानुभूति नहीं होती. लेकिन इस बात को यहीं छोडता हूं. मैं उपलब्धता और महंगाई की बात का जवाब देना चाहता हूं।

मान लिया कि बेरोज़गार युवा के पास किताबें खरीदने के पैसे नहीं होते और अगर होते भी हैं तो उसके आसपास किताब की कोई दुकान नहीं होती। मैं इससे आगे की बात करता हूं। आज के समय में शायद ही ऐसा कोई युवा हो जिसके पास मोबाइल फोन न हो. इंटरनेट वाला स्मार्टफोन आज लगभग हर किसी के पास है। इस मोबाइल पर कितनी सारी साहित्यिक सामग्री निशुल्क सुलभ है. आप कहानी, कविता, उपन्यास, व्यंग्य, यात्रा-वृत्तांत, रेखाचित्र, नाटक, आलोचना, कुछ भी यहां पढ़ सकते हैं. कविता कोश, गद्य कोश और हिंदवी जैसे ठिकाने इतने समृद्ध हैं कि आपको बहुत कुछ यहां मिल सकता है. यू-ट्यूब पर विपुल सामग्री सुलभ है। अगर पढ़ने से ऊब जाएं तो अनेक श्रव्य (ऑडियो) साइट्स हैं जहां आप लम्बी-लम्बी रचनाओं का प्रभावशाली पाठ सुन सकते हैं। अगर आपके आसपास किताबों की दुकान नहीं है तो आप ई-कॉमर्स साइट्स से घर बैठे किताब मंगवा सकते हैं. अगर कोई पढ़ना चाहे तो उसके लिए सामग्री की कोई कमी नहीं है।

फिर भी अगर हमारे युवा नहीं पढ़ रहे हैं तो सम्भव है कि यह उनका दोष न हो और वे इस खजाने के होने से अपरिचित हों। यह मात्र एक संभावना है। आज का युवा इतना भी भोंदू नहीं है। वह दुनिया-जहान की खबर रखता है। और अगर नहीं रखता है तो उसे रखनी चाहिए। मैं तो यह भी सोचता हूं कि अगर वह इस तरह की सुविधाओं के अस्तित्व से अपरिचित है तो जब वह कोई नौकरी पा लेगा तब अपने विद्यार्थियों का क्या भला करेगा? जो यह कहे कि उसने बरसों से साहित्य की कोई किताब नहीं पढ़ी है, वह अपने विद्यार्थियों को कुछ पढ़ने के लिए कैसे प्रेरित करेगा? जाहिर है कि नहीं करेगा. और अगर वह नहीं करेगा तो वह किसी भी चयनकर्ता के लिए चयन योग्य कैसे हो सकता है?

यहां एक बात स्पष्ट कर देना जरूरी है. मैं यह नहीं कह रहा कि हिंदी के हर विद्यार्थी को साहित्य का अध्यापक ही बनना चाहिए या हर विद्यार्थी को साहित्य का अध्येता बन जाना चाहिए. लेकिन अगर आपने साहित्य को अपना विषय चुना है, उसमें एम.ए. या पी-एच.डी. की है और अब उसी विषय से जुडी नौकरी चाहते हैं तो कम से कम साहित्य के प्रति आपकी कोई रुचि, जिज्ञासा और प्रतिबद्धता तो दिखाई देनी ही चाहिए. केवल डिग्री आपकी प्रतिबद्धता का प्रमाण नहीं हो सकती।

जो लोग साहित्य, शिक्षा, कोचिंग वगैरह के काम में लगे हैं, जिनके बच्चे कोई नौकरी चाह रहे हैं और उसकी तैयारी में जुटे हैं, या जो खुद नौकरी पाने के लिए प्रयत्नशील हैं, उन सबको इन बातों पर विचार करना चाहिए. अगर आप उस नौकरी के प्रति अपनी कोई रुचि प्रदर्शित नहीं कर पाते जिसके आप आकांक्षी हैं, तो आपको चयन की उम्मीद भी क्यों करनी चाहिए?जो बातें मैंने साहित्य के संदर्भ में कही हैं उन्हें अन्य विषयों के संदर्भ में भी पढ़ा जाना चाहिए. मूल बात तो यह देखी जाती है कि आपकी अपने विषय में कितनी रुचि है और उस रुचि का पोषण करने के लिए आप क्या और कितना करते हैं।

यह समय घोर प्रतिस्पर्धा का है। आपको पूरी गंभीरता से तैयार होना होगा. और तैयारी का अर्थ केवल परीक्षा के पाठ्यक्रम को रटना नहीं है। जिस विषय को आपने अपनी पढ़ाई का विषय बनाया है, उसके प्रति जिज्ञासा और प्रेम भी आपकी तैयारी का हिस्सा होना चाहिए। किताबें पढ़ना केवल परीक्षा पास करने का साधन नहीं है। डिग्री आपको नौकरी के दरवाजे तक पहुंचा सकती है, लेकिन उस दरवाजे के भीतर ले जाने के लिए केवल डिग्री काफी नहीं होती. वहां यह भी पूछा जाता है कि आपने पढ़ा क्या है।

और इस सवाल का जवाब पासबुक, कुंजी या नोट्स नहीं दे सकते।

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

वैश्विक चेतना में श्री गणेशजी : आस्था और कला के शाश्वत सेतु

श्री गणेश चतुर्थी (14 सितम्बर, 2026) पर विशेष....

अब्दुल लतीफ़ उस्ता

कलाओं को यदि समस्त मानवीय बौद्धिक प्रक्रियों का सार कहा जाये तो गलत नहीं होगा। मानवीय सभ्यता के इसी बौद्धिक अनुक्रम में कला के दो प्रमुख ध्येय रहे हैं - पहला यथार्थ और दूसरा सामंजस्य। इन्हीं ध्येयों ने कला को आदर्शवादी चारित्रिक विलक्षणता, रहस्यवाद, प्रतीकवाद तथा पारलौकिकता प्रदान की है। यही कारण है कि आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का, विभिन्न देवी-देवताओं के विविध स्वरूपों के माध्यम से कलाओं में समावेश हुआ है।

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे... भारतीय संस्कृति में श्री गणेश केवल विघ्नहर्ता, बुद्धि, शुभारंभ के देवता और गणों के अधिपति ही नहीं, बल्कि वे भारतीय कला, लोकविश्वास और सांस्कृतिक स्मृति के संभवत: सबसे प्रभावशाली प्रतीक भी हैं। प्राचीन मंदिरों की पाषाण-मूर्तियों से लेकर तंजौर, मधुबनी, मांडणा जैसी लोक चित्रकला तक में उन्हें प्रमुखता से उकेरा गया है। शास्त्रीय कला में नृत्यरत श्री गणेश अपनी भुजाओं में मोदक और परशु धारण किए दिखाई देते हैं। आधुनिक भारतीय कलाकारों ने भी श्री गणेश के रूप को समकालीन और अमूर्त शैलियों में सुंदरता से ढाला है। शुभ अवसरों के प्रतीक के रूप में उनकी आकृतियां आज भी भारतीय घरों के मुख्य द्वारों और पांडुलिपियों की शोभा बढ़ाती हैं।

श्री गणेश की हाथी-मुखी आकृति भारतीय जनमानस में जितनी परिचित है, उतनी ही हृदयंगम उनकी सांस्कृतिक यात्रा भी है। विदेशी संस्कृतियों में भी श्री गणेश कलात्मक और धार्मिक परंपराओं के साथ संवाद करते हुए नए अर्थ प्रदान करते हैं। नेपाल, श्रीलंका, कंबोडिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, तिब्बत, चीन और जापान की कला में श्री गणेशजी की उपस्थिति इस बात का अकाट्यय प्रमाण है कि संस्कृति सीमाओं से बंधी नहीं रहती; वह यात्रा करती है, बदलती है और नए समुदायों में रच-बस जाती है।

कलाओं में विषय के रूप में श्री गणेशजी की लोकप्रियता और सुग्राहयता का प्रमुख कारण उनकी दृश्य पहचान भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा में उनका टूटा हुआ दंत ज्ञान और त्याग का प्रतीक है, अंकुश मन और इच्छाओं पर नियंत्रण का, पाश आसक्ति को बांधने का और मोदक आध्यात्मिक आनंद का। मूषक उनका वाहन है, जो चंचल इच्छाओं और छोटे से छोटे जीव में निहित शक्ति का संकेत माना जाता है। जब यह प्रतीक-भाषा भारत से बाहर पहुंची, तब वहां के स्थानीय कलाकारों ने उसमें अपने समुदाय की वेश-भूषा, स्थापत्य, शिल्प और धार्मिक संवेदनाओं को सम्मिलित किया।

नेपाल की कला में श्री गणेशजी साझा आस्था और सांस्कृतिक सह-अस्तित्व के प्रतीक है, जहाँ वे हिंदू और बौद्ध परंपरा में हेरंब रूप में अत्यंत लोकप्रिय है। काठमांडू घाटी के नेवारी समुदाय द्वारा प्राचीन मंदिरों हेतु पंचमुखी हेरंब गणेश की अनेक पाषाण, कांस्य और धातु प्रतिमाएं बनाई जाती रही हैं, और ये प्रतिमाएं मंदिरों के प्रवेशद्वार पर स्थापित होकर रक्षा और शुभारंभ का प्रतीक बनती हैं। कुछ नेपाली प्रतिमाओं में श्री गणेश खड़े हुए अंकित हैं, जबकि भारतीय कला में उनका आसनस्थ रूप अधिक प्रचलन में है। उनके मुकुट, हार, बाजूबंद और अन्य अलंकरणों में स्थानीय धातु-कला का सौन्दर्य और सूक्ष्मता दिखाई देती है। बौद्ध मंदिरों के प्रवेश पर स्थापित श्री गणेश की प्रतिमा यह इंगित करने में सक्षम है कि धार्मिक अभिव्यक्ति दीवारों से विभाजित नहीं होतीं, बहुधा यह एक प्रतीक विभिन्न समुदायों के लिए अलग-अलग अर्थों के साथ साझा सांस्कृतिक धरोहर बन जाता है। इसी प्रकार नेवारी समुदाय की पारंपरिक पौभा चित्रकला में भी श्री गणेश के विविध स्वरूपों का चित्रण बहुतायत से हुआ है। यह चित्र परंपरा तिब्बती थंगका कला की जननी मानी जाती है, जिसमे सूती कपड़े पर प्राकृतिक रंगों और सोने-चांदी की भस्म से चित्र उकेरे जाते हैं।

तिब्बती बौद्ध कला में श्री गणेश महाकाल गणपति, धर्मपाल या विनायक के रूप में अंकित हुए हैं, जहाँ उनका स्वरूप भारतीय कलाओं में चित्रित श्री गणेश से काफी अलग हो सकता है। थंगका चित्रों, तांत्रिक मंडलों और अनुष्ठानिक कला में लाल, श्वेत या अन्य गहरे रंगों से उनकी पुष्ट देह, अनेक भुजाएं और विभिन्न अस्त्र-शस्त्र चित्रित किए जाते हैं। पहली दृष्टि में यह विरोधाभास प्रतीत हो सकता है, किंतु वास्तव में यह तिब्बती तांत्रिक कला की जटिल प्रतीक-व्यवस्था का हिस्सा है। यहां भी श्री गणेश की छवि को एक नए दार्शनिक और अनुष्ठानिक संदर्भ में समझा जा सकता है।

श्रीलंका में श्री गणेशजी, व्यापक लोकविश्वास और बौद्ध सांस्कृतिक परिवेश में दिखाए देते हैं। श्रीलंका की मूर्ति-कला परम्परा में श्री गणेश की प्रतिमाएं भारतीय प्रभाव और भारतीय उपमहाद्वीपीय स्थानीय शैली के समागम को दर्शाती हैं। यह समागम और समन्वय किसी एक संस्कृति की दूसरी पर विजय नहीं, बल्कि समुद्री मार्गों और ऐतिहासिक संपर्कों से विकसित हुआ सांस्कृतिक संवाद है। दक्षिण एशिया के अन्य देशों की भांति, श्रीलंका में भी धार्मिक कथाएं, शिल्प-तकनीकें और प्रतीक एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक प्रचारित-प्रसारित होते रहे हैं और स्थानीय समुदायों ने उन्हें अपनी संवेदना के अनुरूप अंगीकृत किया है।

कंबोडिया के इतिहास और प्राचीन मंदिरों की दीवारों पर उकेरी गई शिल्पकृतियों से स्पष्ट होता है कि खमेर मान्यताओं, धर्म और सांस्कृतिक कला में प्राचीन काल से ही श्री गणेश का गहरा प्रभाव रहा है। ऐतिहासिक दृष्टि से श्री गणेश की मूर्तियाँ 7वीं से 8वीं शताब्दी के पूर्व-अंगकोर काल (फनॉम दा और संबोर प्रेई कुक शैली) से लेकर अंगकोर काल तक पाई जाती हैं। अंगकोर और उससे जुड़े मंदिरों में पाषाण तथा कांस्य से निर्मित गणेश प्रतिमाएं मिलती हैं। खमेर शैली में श्री गणेश प्रतिमाएँ प्राय: शांत बैठी या खड़ी मुद्रा में बनाई जाती थी, जो असीम शक्ति, भव्यता और गहरे ज्ञान का प्रतीक हैं। कई बार मूषक का अभाव भी मिलता है, जिससे प्रकट होता है कि किसी देवता की पहचान स्थानीय कला में नए ढंग से निर्मित की जा सकती है। आज के आधुनिक कंबोडियाई समाज में भी कारोबारी, कलाकार और छात्र अपने कार्यों के सुचारू संचालन, समृद्धि और बुद्धि की प्राप्ति के लिए अपने घरों व कार्यस्थलों में श्री गणेश की प्रतिमा या चित्र स्थापित करते हैं। इस प्रकार, कंबोडियाई गणेश भारतीय और खमेर परंपराओं की साझा रचनात्मकता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

जापान में कांगितेन या शोतें के रूप में प्रसिद्ध श्री गणेश का स्वरुप, मुख्यत: गूढ़ बौद्ध परंपराओं से सम्बंधित है, जिन्हें बौद्ध धर्म की वठायान और शिंगोन परंपराओं में मुख्य रूप से पूजा जाता है। कांगितेन को आनंद-समृद्धि तथा शोतें को पवित्रता-श्रेष्ठता से संबंधित माना जाता है। जापानी कला में उनका सबसे विशिष्ट रूप द्वि-शरीरी आकृति है, जिसमें दो हाथी-मुखी आकृतियां एक-दूसरे को आलिंगन करती हुई दिखाई देती हैं। यह रूप भारतीय श्री गणेश की सामान्य प्रतिमा से बहुत अलग है, फिर भी इसमें श्री गणेश की पहचान स्पष्ट रहती है। श्री गणेश का यह जापानी स्वरुप, सांस्कृतिक सद्भाव का अत्यंत सुंदर प्रतीक है जहाँ दो अलग रूप एक-दूसरे को नष्ट नहीं करते, बल्कि साथ आकर नए आध्यात्मिक अर्थ उत्पन्न करते हैं।

थाईलैंड में श्री गणेश को फ्रा फिकानेट के रूप में सफलता, सौभाग्य, ज्ञान और विशेष रूप से कलाओं के संरक्षक माना जाता हैं। लगभग 15वीं शताब्दी की थाई आसनस्थ गणेश प्रतिमा दक्षिण-पूर्व एशियाई कला में सांस्कृतिक अनुकूलन का महत्वपूर्ण उदाहरण कहा जा सकता है। थाई कलाकारों ने श्री गणेश की भारतीय पहचान को बनाए रखते हुए उनके स्वरूप में स्थानीय राजसी सौंदर्य के भाव सम्मिल्लित किये। उनका मुकुट थाई राजकीय मुकुट जैसा, वस्त्र स्थानीय शैली के और आसनस्थ मुद्रा में कुलीन गरिमा दिखाई देती है। वे कभी शांत और ध्यानमग्न, कभी अलंकृत राजसी आसन में, और कभी अनेक भुजाओं के साथ अंकित किये जाते रहे हैं। थाईलैंड की कला में श्री गणेश का समावेश इस बात का सुंदर उदाहरण है कि कोई धार्मिक प्रतीक स्थानीय समाज के रचनात्मक जीवन का संरक्षक बन समुदाय को विकासगामी दिशा दे सकता है।

इसी प्रकार इंडोनेशिया के जावा और बाली द्वीपों में श्री गणेशजी का महती विषय के रूप में समावेश, कला सांस्कृतिक समन्वय की प्रभावशाली परिभाषाएँ रचता है। समुद्री व्यापार और धार्मिक संपर्कों के माध्यम से भारतीय शैव तथा बौद्ध विचार यहां पहुंचे। जावा में श्री गणेश की प्रतिमाएं प्राय: मंदिरों और शिवजी से संबंधित धार्मिक स्थलों के पास प्रतिष्ठित की जाती थी। यहाँ श्री गणेश प्रतिमा के मुख पर गंभीरता, देह में स्थिरता और मुद्रा में ध्यान का भाव स्पष्ट दिखाई देता है। जावा क्षेत्र की कतिपय प्रतिमाओं में तांत्रिक प्रभाव के कारण उठा अलंकरण, मुंड-मालाएं या अन्य शक्तिशाली रूपक दिखाई देते हैं। यह स्वरूप भारतीय गृहस्थ-परंपरा के आनंदमय गणेश से भिन्न है, परंतु असंबद्ध नहीं। जावा के स्थानीय कलाकारों एवं मूर्तिशिल्पियों ने श्री गणेश की मूल पहचान को अपने आध्यात्मिक अनुभव और स्थानीय शिल्प-परंपरा के साथ जोड़कर नया अर्थ एवं दिशा प्रदान की है।

बाली में गणेश मंदिरों के प्रवेशद्वार, पवित्र परिसर और प्राकृतिक स्थलों के रक्षक के रूप में दिखाई देते हैं। पत्थर, लकड़ी और धातु में उकेरी गई उनकी मूर्तियां बाली के भव्य मंदिर-शिल्प, पौराणिक मुखौटों, पुष्प-सज्जा और पारंपरिक पौराणिक कलाकृतियों के साथ सुंदर सामंजस्य स्थापित करती हैं। यहाँ के मंदिरों में उनकी उपस्थिति यह भी दर्शाती है कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान तभी समठा और स्थायी होता है जब वह स्थानीय समुदायों के दैनिक जीवन, उत्सव और स्थापत्य में स्थान प्राप्त कर लेता है।

कला विषय के रूप में श्री गणेश का यह अंतरराष्ट्रीय प्रभाव केवल धार्मिक या अध्यात्मिक मूल्यों का प्रसार नहीं, बल्कि व्यापारिक, राजनैतिक और कलात्मक आदान-प्रदान से निपजा एक जीवंत सांस्कृतिक संवाद है। भारत से लेकर नेपाल, थाईलैंड, जावा, बाली और जापान तक श्री गणेश ने कला विषय के रूप में अपनी मूल पहचान खोए बिना स्थानीय परंपराओं, कला और लोक-विश्वासों को सहजता से आत्मसात किया है। आज की विभाजित दुनिया में उनका यह वैश्विक स्वरूप एक गहरा संदेश देता है कि अपनी सांस्कृतिक पहचान को अक्षुण्ण रखते हुए भी दूसरों के साथ सह-अस्तित्व और संवाद संभव है। श्री गणेश केवल विघ्नों को दूर करने वाले देवता ही नहीं, बल्कि भौगोलिक, धार्मिक और सामाजिक सीमाओं से परे मानव समुदाय को जोड़ने वाले एक शाश्वत सांस्कृतिक प्रतीक हैं।

-अब्दुल लतीफ़ उस्ता,
कला इतिहासकार एवं विरासत विशेषज्ञ

चमत्कारी संत बाबा रामदेवजी

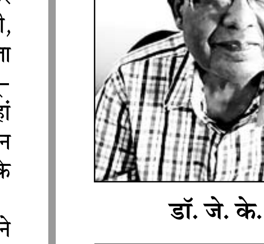

डॉ. जे. के. गर्ग

पीरों के पीर रामापीर, बाबाओं के बाबा रामदेव बाबा को सभी भक्त बाबारी कहते हैं। जहां भारत ने परमाणु विस्फोट किया था, वे वहां के शासक थे। हिन्दू उन्हें रामदेव जी और मुस्लिम उन्हें रामसा पीर कहते हैं। मध्यकाल में जब अरब, तुर्क और ईरान के मुस्लिम शासकों द्वारा भारत में हिन्दुओं पर अत्याचार कर उनका धर्मांतरण किया जा रहा था, तो उस काल में हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए सैकड़ों चमत्कारी सिद्ध, संतों और सूफी साधुओं का जन्म हुआ। उन्हीं में से एक हैं रामापीर।

बाबा रामदेव (1352-1385) बाबा रामदेव को द्वारकाधीश (श्रीकृष्ण) का अवतार माना जाता है। इन्हें पीरों का पीर रामसा पीर कहा जाता है। सबसे ज्यादा चमत्कारी और सिद्ध पुरुषों में इनकी गणना की जाती है। हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक बाबा रामदेव के समाधि स्थल रुणिचा में मेला लगता है, जहां भारत और पाकिस्तान से लाखों की तादाद में लोग आते हैं।कुछ विद्वान मानते हैं कि विक्रम संवत 1409 (1352 ईस्वी सन्) को उडू काश्मीर (बाड़मेर) में बाबा का जन्म हुआ था और विक्रम संवत 1442 में उन्होंने रुणिचा में जीवित समाधि ले ली। पिता का नाम अजमाल जी तंवर, माता का नाम मैणादे, पत्नी का नाम नेतलदे, गुरु का नामबालीनाथ, घोड़े का नाम लाली रा असवार था।

बाबा रामदेव ने छुआछूत के खिलाफ कार्य कर दलित हिन्दुओं का पक्ष ही नहीं लिया बल्कि उन्होंने हिन्दू और मुस्लिमों के बीच एकता और भाईचारे को बढ़ाकर शांति से रहने की शिक्षा भी दी। बाबा रामदेव पोकरण के शासक भी रहे। उन्होंने डाली बाई नामक एक दलित कन्या को अपने घर बहन-बेटी की तरह रखकर पालन-पोषण कर समाज को यह संदेश दिया कि कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। बाबा ने अपने जीवनकाल में लोगों की रक्षा और सेवा करने के लिए उनको कई चमत्कार दिखाए। आज भी बाबा अपनी समाधि पर साक्षात विराजमान हैं। आज भी वे अपने भक्तों को चमत्कार दिखाकर उनके होने का अहसास कराते रहते हैं। बाबा द्वारा चमत्कार दिखाने का परचा देना कहते हैं।

मान्यता के मुताबिक बाबा के चमत्कार होने से लोग गांव-गांव से रुणिचा आने लगे। यह बात रुणिचा और आसपास के गांव के मौलवियों को नहीं भाई। उन्हें लगा कि इस्लाम खतरे में है। उनको लगा कि मुसलमान बने हिन्दू कहीं फिर से मुसलमान नहीं बन जाएं तो उन्होंने बाबा को नीचा दिखाने के लिए कई उपक्रम किए। जब उन पीरों और मौलवियों के प्रयास असफल हुए तब उन्होंने यह बात मक्का के मौलवियों और पीरों से कही। उन्होंने कहा कि भारत में एक ऐसा पीर पैदा हो गया है, जो अंधों की आंखें ठीक कर देता है, लंगड़े को चलना सिखा देता है और यहां तक वह मरों को जिंदा भी कर देता है।

मक्का के मौलवियों ने इस पर विचार किया और फिर उन्होंने अपने पूज्य चमत्कारिक 5 पीरों को जब बाबा की ख्याति और उनके अलौकिक चमत्कार के बारे में बताया तो वे पांचों पीर भी बाबा की शक्ति को परखने के लिए उत्सुक हो गए। कुछ दिनों में वे पीर मक्का से चलकर रुणिचा के रास्ते पर जा पहुंचे।

रास्ते में भी बाबा रामदेव से उनकी मुलाकात हुई। पांचों पीरों ने रामदेव जी से पूछा कि हे भाई! रुणिचा यहां से कितनी दूर है? तब रामदेवजी ने कहा कि यह जो गांव सामने दिखाई दे रहा है वही तो रुणिचा है। क्या मैं आपके रुणिचा आने का कारण पूछ सकता हूं? तब उन पांचों में से एक पीर बोला कि हमें यहां रामदेवजी से मिलना है और उसकी पीराई देखनी है। जब रामदेवजी बोले हे पीरजी! मैं ही रामदेव हूं और आपके सामने खड़ा हूं, कहिए मेरे योग्य क्या सेवा है? पांचों पीर बाबा की बात सुनकर कुछ देर उनकी ओर देखते रहे फिर हंसने लगे और सोचने लगे कि साधारण-सा दिखाई देना वाला व्यक्ति ये पीर है क्या?

रामदेवजी बाबा ने उनकी आवभगत की और अतिथि देवो भव की भावना से उन्हें भोजन के लिए आमंत्रित किया। बाबा के घर जब पांचों पीरों के भोजन हेतु जाजम बिछाई गई, तकिए लगाए गए, पंखे लगाए गए और सेवा-सत्कार के सभी सामान सजाए गए, तब भोजन पर बैठते ही एक पीर बोला कि अरे, हम तो अपने खाने के कटोरे मक्का ही भूल आए हैं। हम तो अपने कटोरों में ही खाना खाते हैं, दूसरे के कटोरों में नहीं, यह हमारा प्रण है। अब हम क्या कर सकते हैं? आप यदि मक्का से वे कटोरे मंगवा सकते हैं तो मंगवा दीजिए, वर्ना हम आपके यहां भोजन नहीं कर सकते। तब बाबा रामदेव ने उन्हें विनयपूर्वक कहा कि उनका भी प्रण है कि घर आए अतिथि को बिना भोजन कराए नहीं जाने देते। यदि आप अपने कटोरों में ही खाना चाहते हैं तो ऐसा ही होगा। इसके साथ ही बाबा ने अलौकिक चमत्कार दिखाया और जिस पीर का जो कटोरा था उसके सम्मुख रखा गया। इस चमत्कार (परचा) से वे पीर सकते में रह गए। जब पीरों ने पांचों कटोरे मक्का वाले देखे तो उन्हें अचंभा हुआ और मन में सोचने लगे कि मक्का कितना दूर है। ये कटोरे तो हम मक्का में छोड़कर आए थे। ये कटोरे यहां कैसे आए? तब उन पीरों ने कहा कि आप तो पीरों के पीर हैं। पांचों पीरों ने कहा कि आज से आपको दुनिया रामापीर के नाम से पूजेगी। इस तरह से पीरों ने भोजन किया और श्रीरामदेवजी को पीर की पदवी मिली और रामदेव जी, रामापीर कहलाए। बाबा रामदेव ने रानी नेतल को मेवाड़ के सेठ दलाजी को, अंधे साधु को भी परचा दिया था।

बाबा रामदेवजी के समाधि स्थल रामदेवरा से 12 किलोमीटर स्थित एक पांच पीपलों से युक्त पेड़ है। रामदेवरा से पूर्व की ओर एकां गांव के पास एक छोटी-सी नाडी के पाल पर घटित इस कार्य के दौरान पीरों ने भी परचे स्वरूप 5 पीपली लगाई थी, जो आज भी वहां पर विद्यमान है। यह रामदेवरा से 12 किलोमीटर दूर एकां गांव में स्थित है। यहां पर बाबा रामदेव का एक छोटा-सा मंदिर एवं सरोवर भी है।

पश्चिम राजस्थान में पेयजल संकट को देखते हुए रामदेव जी ने विक्रम संवत् 1439 में एक तालाब खुदवाया जिसे आज उनके नाम से राम सरोवर कहा जाता है। इसके पश्चिम छोर पर अद्भुत आश्रम व पाल के उत्तरी सिरे पर बाबा रामदेव जी की जीवित समाधि है। पाल के इसी हिस्से में भक्त शिरोमणि डाली बाई की भी जीवित समाधि है। पर्चा बावड़ी मंदिर के पास ही स्थित है। इस बावड़ी का निर्माण मिति फाल्गुन सुदी तृतीया वार बुधवार विक्रम संवत् 1897 को संपूर्ण हुआ था। माना जाता है कि इस बावड़ी का निर्माण बाबा रामदेवजी के आदेशानुसार बाणिया बोयता ने करवाया था। रामदेव जी के गुरु बालीनाथ जी का धूना या आश्रम पोकरण में स्थित है। बाबा ने बाल्यकाल में यहीं पर गुरु बालीनाथजी से शिक्षा प्राप्त की थी।

श्री बाबा रामदेव जी की समाधि संवत् 1442 को रामदेव जी ने अपने हाथ से श्रीफल लेकर सब बड़े- बूढ़ों को प्रणाम किया तथा सबने पत्र-पुष्प चढ़ाकर रामदेवजी का हार्दिक तन-मन व श्रद्धा से अंतिम पूजन किया। रामदेवजी ने समाधि में खड़े होकर सबके प्रति अपने अंतिम उपदेश देते हुए कहा कि प्रतिमाह की शुक्ल पक्ष की दूज को पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन करके पर्वोत्सव मनाना, रात्रि जागरण करना। प्रतिवर्ष मेरे जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में तथा अंतर्ध्यान समाधि होने की स्मृति में मेरे समाधि स्तर पर मेला लगेगा। मेरे समाधि पूजन में भ्रांति व भेदभाव मत रखना। मैं सदैव अपने भक्तों के साथ रहूंगा। इस प्रकार श्री रामदेवजी महाराज ने समाधि ली।

डॉ. जे. के. गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 14 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत-2083, चित्रा नक्षत्र, दिन 1:55 तक, ब्रह्म योग दिन 12:47 तक, गर करण प्रात: 7:07 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज रवियोग दिन 1:55 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 7:26 से आरम्भ होगा। आज हरितालिका तीज व्रत है। आज महागणपति चतुरथी, कलंक चतुरथी, जैन संवत्सरी (चतुरथी पक्ष), सौभाग्य चतुरथी, गौरी व्रत है।

आज चन्द्र दर्शन निषेध है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 8:16 पर होगा। गणेश पूजन का श्रेष्ठ समय दिन 11:09 से दिन 1:21 तक रहेगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया- सूर्योदय से 7:47 तक, शुभ 9:14 से 10:51 तक, चर 1:54 से 3:26 तक, लाभ-अमृत 3:26 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल- 7:30 से 9:00 तक, सूर्योदय 6:15, सूर्यास्त 6:30

मेष
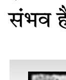

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते है। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

वृष
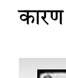

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह

शुभ कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
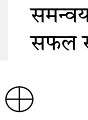

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
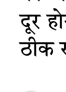

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
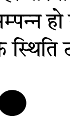

घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
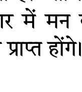

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण वार्ता हो सकती है और महत्वपूर्ण योजना बन सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मीन
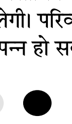

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।